पेंसिल कैसे बनती है?

डेरेक मिलर



लोग हमेशा पेंसिल का इस्तेमाल करते हैं.

हम पेंसिल का इस्तेमाल लिखने

और चित्र बनाने के लिए करते हैं.

पेंसिल देखने में साधारण लगती हैं.

लेकिन उसे बनाना मुश्किल होता है.



पेंसिल के कई हिस्से होते हैं.

पेंसिल के बाहर की तरफ लकड़ी होती है.

लकड़ी, पेंसिल को मोटा बनाती है.

लकड़ी से पेंसिल को पकड़ना

आसान हो जाता है.



पेंसिल की शुरुआत एक

लकड़ी की पट्टी (स्लैट) से होती है.

स्लैट लकड़ी के चपटे टुकड़े होते हैं.

एक स्लैट से कई पेंसिलें बनती हैं.



एक मशीन हर स्लैट में खांचे बनाती है.

ये खांचे ग्रेफाइट रखने के लिए होते हैं.

ग्रेफाइट काले रंग की होती है.

हर खांचे में ग्रेफाइट बिछाई जाती है.



ग्रेफाइट कागज़ पर निशान बनाती है.

ग्रेफाइट को लेड भी कहते हैं.

लेकिन लेड, ग्रेफाइट से बनती है.

ग्रेफाइट को ज़मीन के नीचे

से निकाला जाता है.



फिर ऊपर एक और स्लैट

(लकड़ी की पट्टी) लगाई जाती है.

दोनों स्लैट के बीच ग्रेफाइट यानी लेड होती है.

फिर दोनों पट्टियों को एक साथ

चिपका दिया जाता है.

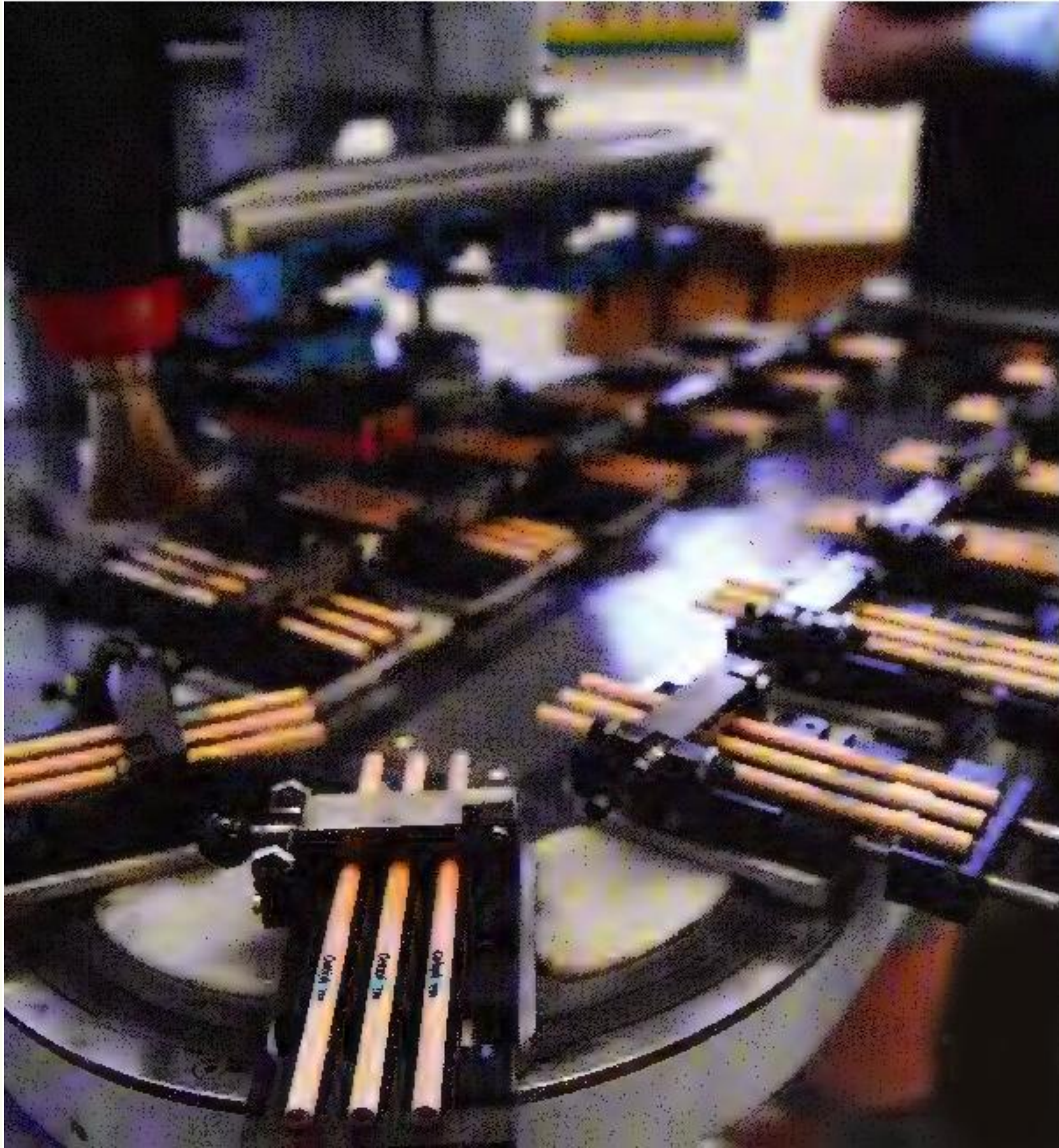
इससे ग्रेफाइट अपनी जगह पर बनी रहती है.



फिर पट्टियों को काटा जाता है.

एक पट्टी से कई पेंसिलें बनती हैं.

पेंसिलें लगभग तैयार हैं.



उसके बाद पेंसिल पर एक छल्ला (फेरूल) चिपकाया जाता है.

फेरूल, एल्युमीनियम धातु का एक पतला छल्ला होता है.

इस फेरूल में रबड़ फिट होती है.

रबड़ की मदद से आप अपनी गलती को सुधार सकते हैं.



अब पेंसिल तैयार है!

लकड़ी की मोटाई के कारण

पेंसिल को पकड़ना आसान होता है.

लिखने पर ग्रेफाइट कागज़ पर निशान छोड़ती है.

लोग पेंसिल से लिखते और चित्र बनाते हैं!

